REET 2025 LEVEL-1&2

वंदन बैच

संस्कृत

पठन एवं लेखन कौशल

LIVE 31-12-2024 03:00 PM

पठन- कौशल (वाचन) कौशल

पठनस्य अर्थः : पठनस्य अर्थः लिखितस्य अथवा मुद्रितस्य शब्दस्य उच्चारणं कृत्वा तेषां पठनकाले अर्थं अवगन्तुम्। एषा प्रक्रिया यस्मिन् पाठकः शब्दवाक्यानां अर्थं अवगत्य तस्य प्रभावीरूपेण आत्मसातीकरणं करोति ।

पठनस्य रूपाणि :

सस्वर पठनम्

अस्मिन् स्वरैः सह पठनेन शब्दार्थः ज्ञायते । एषः पठनस्य आरम्भः चरणः अस्ति तथा च अस्य उद्देश्यं छात्राणां कृते शब्दानां सम्यक् उच्चारणस्य अभ्यासं दातुं भवति।

व्यक्तिगतपठनम् : एकेन व्यक्तिना उक्तिः।

समवेतपठनम् : द्वयोः वा अधिकयोः छात्रयोः एकत्र पाठः, येन छात्रेषु आत्मविश्वासस्य अभावः, संकोचः च दूरीकृतः भवति।

मौनपठनम्/पठनम्

अस्मिन् शब्दं विना मनसि पठित्वा लिखितस्य अर्थः ज्ञायते । गहन अध्ययनार्थं उपयोगी भवति तथा च छात्रान् अध्ययने ध्यानेन एकाग्रतायाः च सह कार्यं कर्तुं प्रेरयति।

सस्वरपठनस्य उद्देश्यम् :

छात्राः शब्दानां सम्यक् उच्चारणस्य अभ्यासं कर्तुं।

सम्यक् उच्चारणं, बलं, वेगः, लयः, येतिः, स्वराघात् च सम्यक् प्रयोगः शिक्षितुं।

छात्राः पाठं स्पष्टतया स्वाभाविकतया च पठितुं समर्थाः भवेयुः।

प्राथमिक स्तर

मौनपठनस्य उद्देश्यम् :

गहने अध्ययने एकाग्रतायां च सहायता।

स्वाध्यायस्य आदतं प्रवर्तयितुं छात्रान् आत्मनिर्भर अध्ययनार्थं प्रेरयितुं च।

छात्राणां दीर्घकालं पठितुं, उत्तमं अर्थं धारयितुं च सहायता।

उच्च स्तर

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

पठनविधयः :

उच्चारणविधि : शब्दोच्चार शिक्षण।

अक्षरबोधविधिः : अक्षरशब्दानां परिचयस्य प्रक्रिया ।

स्वरविज्ञानविधिः : समानध्वनियुक्तानां शब्दानां परिचयः ।

देखो और कहो विधिः: पश्यन् शब्दानाम् उच्चारणम्।

वाक्यविधिः : सम्पूर्णं वाक्यं पठितुं अभ्यासं कर्तुं।

सघनपठनम् : गहन पठन (Intensive Reading):

यदा अस्माभिः कश्चन विषयः गभीरतया अवगन्तुं भवति तदा एषा पद्धतिः उपयोगी भवति । अस्मिन् पुनः पुनः पठित्वा ग्रन्थस्य सम्पूर्णार्थस्य अवगमनस्य प्रयासः क्रियते ।

स्किमिंग् : विहंगम दृष्टिपात (Skimming):

मुख्यविचारं वा सारांशं वा शीघ्रं प्राप्तुं एषा प्रविधिः उपयुज्यते, यस्मिन् पाठकः शीर्षकं, उपशीर्षकं, मुख्यशब्दं च दृष्ट्वा विषयस्य सामान्यविचारं प्राप्नोति

स्कैनिङ्ग क्रमवीक्षण (Scanning):

एषा पद्धतिः विशिष्टसूचनाः अन्वेष्टुं उपयोगी भवति, यथा शीघ्रं शब्दविशेषस्य वा सूचनाखण्डस्य वा स्थानं ज्ञातुं । परीक्षायाः सज्जतायां एषा पद्धतिः सहायका भवति ।

संवादात्मकपठनम् : डायलॉगिक रीडिंगः

एषा प्रक्रिया बालकानां सह संवादं कृत्वा पठनं अवगन्तुं साहाय्यं करोति, यस्मिन् बालकान् प्रश्नान् पृच्छन्ति, तेषां प्रतिक्रियाणां

विस्तारं च कुर्वन्ति । पठनस्य गहनतया अवगमने साहाय्यं करोति, आत्मनिर्भरतायाः विकासं च करोति ।

पठनकौशलस्य उद्देश्यम् :

- पठनप्रक्रिया सार्थकं, उद्देश्यपूर्णं, चिन्तन प्रधान च कर्तुं।
- छात्राणां कृते शब्दानां सम्यक् उच्चारणं शिक्षितुं।
- पाठस्य अर्थं पठन् अवगत्य च शब्देषु सम्यक् बलं दत्त्वा।
- छात्राणां शब्दावली वर्धयितुं नूतनशब्दकोशस्य परिचयं च कर्तुं।

➢ एताः पठनविधयः कौशलाः च शिक्षायां विशेषतः छात्राणां भाषाकौशलस्य उन्नयनार्थं महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहन्ति ।

पठन (वाचन) का अर्थ - पठन अथवा वाचन का शाब्दिक अर्थ है - लिखे हुए या छपे हुए शब्दों का उच्चारण करना । लिखित सामग्री को पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया को पठन अथवा वाचन कहा जाता है।

पठन (वाचन) के रूप- सामान्यतः वाचन / पठन दो प्रकार का होता है –

(1) सस्वर वाचन / पठन

(2) मौन वाचन / पठन

(1) सस्वर वाचन / पठन - स्वर सहित पढ़ते हुए अर्थ ग्रहण करना सस्वर वाचन/पठन कहलाता है। यह पठन की प्रारम्भिक अवस्था होती है । सस्वर

वाचन / पठन के द्वारा भाषा की वर्णमाला के लिपिबद्ध वर्णों की पहचान करवायी जाती है । तत्पश्चात् शब्दों एवं वाक्यों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास सस्वर वाचन से ही करवाया जाता है ।

(क) सस्वर वाचन के रूप- सस्वर वाचन दो प्रकार का होता है-

(i) व्यक्तिगत वाचन,

(ii) समवेत वाचन ।

(i) व्यक्तिगत वाचन - जो सस्वर वाचन एक व्यक्ति द्वारा आवाज करते हुए किया जाता है, व्यक्तिगत वाचन कहलाता है ।

- अध्यापक द्वारा किए जाने पर यह आदर्शवाचन एवम् छात्र द्वारा किए जाने पर यह अनुवाचन अथवा अनुकरण वाचन कहलाता है।

- संस्कृत शिक्षण में अध्यापक द्वारा प्रस्तुत आदर्शवाचन का अत्यधिक महत्त्व है। क्योंकि संस्कृत एक संलिष्ट भाषा है। छात्र अध्यापक का अनुकरण करते हुए ही उचित स्वराघात, बलाघात, यति, गति, लय आदि के साथ वाचन करने की योग्यता का ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

- **(ii) समवेत वाचन-** दो या दो से अधिक छात्रों द्वारा आवाज करते हुए किया जाने वाला वाचन समवेत वाचन कहलाता है। इसे सामूहिक वाचन भी कहते हैं । संस्कृत भाषा में मन्त्रोच्चारण करने में समवेत वाचन का

महत्त्वपूर्ण स्थान है। इससे छात्रों की झिझक दूर होती है तथा उनमें आत्मविश्वास का संचार होता है।

➢

(2) मौन वाचन / पठन - लिखित सामग्री को बिना आवाज किए मन ही मन में तन्मयतापूर्वक पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया को मौन वाचन अथवा मौन पठन कहते हैं

(क) मौन वाचन अथवा पठन का महत्त्व - शिक्षण-अधिगम को प्रभावकारी बनाने में मौन वाचन का अत्यधिक महत्त्व एवम् उपयोगिता है ।

- सस्वर वाचन के उपरान्त छात्रों को मौन वाचन का अभ्यास करवाया जाता है। स्वाध्याय में मौन वाचन की अपनी विशेष उपयोगिता है ।

- अध्यापक द्वारा पाठित पाठ का मौन वाचन करने के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाता है।

मौन वाचन में मुख्यावयव निष्क्रिय रहते हैं तथा नेत्र एवं मस्तिष्क ज्यादा सक्रिय होते हैं । इससे बिना थके ज्यादा समय तक पढ़ा जा सकता है। मौन पठन के समय पाठक एकाग्रचित एवं तन्मय होकर पढ़ता है। इससे अर्थ-ग्रहण की क्रिया अधिक स्थायी होती है। मौन वाचन से स्वाध्याय की आदत पड़ती है। मौन वाचन का अभ्यास पाठक को गहन अध्ययन के लिए प्रेरित करता है जोकि पठन की परकाष्ठा है।

पठन (वाचन) - कौशल की विधियाँ

(1) वर्णोच्चारण विधि-

(2) अक्षर-बोध विधि -

(3) ध्वनि-साम्य विधि -

(4) देखो और कहो विधि-

(5) वाक्य-विधि -

(6) कथा-विधि-

(7) श्लोकोच्चारण-विधि -

(8) अनुकरण - विधि -

(9) साहचर्य-विधि

पठन कौशल के उद्देश्य -

- पठन एक सार्थक, उद्देश्यपूर्ण एवं चिंतन प्रधान प्रक्रिया है, जिसमें भाषा की संरचना की समझ तथा पढ़े जा रहे पाठ के साथ विद्यार्थी के भावनात्मक सम्बन्ध स्वर अर्थ ग्रहण पर बल दिया जाता है
- वर्णों, ध्वनियों एवं शब्दों का ज्ञान करवाना, जिससे छात्र पढ़ते समय शब्दों का उच्चारण शुद्ध रूप में कर सकें।
- पठन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाना।
- पढ़कर पठित वस्तु का भाव समझना तथा दूसरों को भी समझाना। • छात्रों के शब्दकोश में वृद्धि करना । जहाँ वे नये-नये शब्दों से परिचित होते हैं।

- पठन कौशल का मुख्य उद्देश्य है - अर्थग्रहण करके उसका आकलन करना।

समवेत पठन / वाचन वह है जिसमें दो या अधिक बालक एक साथ जोर-जोर से पढ़ते है तथा इस पठन का एक लाभ है- जिन बालकों में झिझक होती है, साहस की कमी होती है। अपने कण्ठ और उच्चारण पर जिन्हे विश्वास नहीं होता है और उचित गति से पठन / पाठन या वाचन नहीं कर सकते, वे भी पठन, / वाचन की इस किया में भाग ले सकते है।

समवेत वाचन की उपयोगिता तभी है जब शिक्षक निम्नांकित सावधानियाँ बरते -

- समवेत पठन प्राथमिक कक्षाओं में ही कराना चाहिये।

• जहाँ तक सम्भव हो एक टोली का वाचक गति, गायन सम्बन्धी योग्यता समान हो।

• प्रत्येक टोली का एक नेता हो और वह पाठक कला में अपेक्षाकृत निपुण होना चाहिए।

• अध्यापक को प्रत्येक टोली के पास जाकर निरीक्षण करना चाहिये और आवश्यक निर्देश भी देने चाहिये।

मौन वाचन - मौन

वाचन, वाचन सीखने का अन्तिम चरण है। यह एक ऐसा कौशल है जिसकी हमें न केवल भाषा सीखने में ही आवश्यकता पड़ती है बल्कि दूसरे विषयों के लिए भी है।

- मौन पठन एक कला है।
- यह विचारों पर ध्यान केन्द्रित करने का तरीका है।
- यह अध्ययन का व्यापक तरीका है।

• व्यापकपठन (Extensive Reading)

एक प्रकार की पढ़ाई होती है जिसमें विद्यार्थी बड़ी मात्रा में और विभिन्न विषयों पर पढ़ते हैं। इसका उद्देश्य सामान्य तौर पर वाचनाभिरुचि और वाचनानुभव को बढ़ाना होता है।

• व्यापकपठन में छात्र उपन्यास, समाचार पत्र, बच्चों की पत्रिकाएं, कहानियाँ, ब्लॉग, वेबसाइट्स, और अन्य साहित्यिक जैनर पढ़ते हैं।

• यह उन्हें नई शब्दावली को समझने, संदर्भ का अर्थ निकालने, और वाक्यांशों के प्रयोग को समझने में मदद करता है।

- यह तरीका विद्यार्थियों के वाचन गति, समझ, और आत्म-विश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण होता है। यह उन्हें अपनी पढ़ाई में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता भी प्रदान करता है, क्योंकि वे अपनी रुचि के आधार पर सामग्री चुनते हैं और अपनी स्वयं की गति पर पढ़ते हैं।

गहनपठन: यह विधि इस्तेमाल होती है जब हमें किसी विषय को गहराई से समझना होता है। इस प्रकार के पढ़ने में पाठ के अर्थ को समझने में सक्षम होने के लिए ध्यान और फोकस की आवश्यकता होती है।

गहन अध्ययन का महत्व

- गहन पाठन हमें किसी पाठ के अर्थ को ठीक से समझने में मदद करता है ।
- गहन पढ़ना एक शक्तिशाली उपकरण है जो बच्चे को अपने पढ़ने के कौशल को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। इसमें प्रवाह और समझ बढ़ाने के लक्ष्य के साथ एक पाठ को कई बार पढ़ना शामिल है।

- यह बच्चे को किसी पाठ की बेहतर समझ विकसित करने में मदद कर सकता है, साथ ही उनके प्रवाह और समझ को भी बढ़ा सकता है। यह पढ़ने में आत्मविश्वास पैदा करने का भी एक शानदार तरीका है।
- गहन पढ़ना किसी भी बच्चे के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो पढ़ने में संघर्ष कर रहा है। यह उनके कौशल को बेहतर बनाने और उनका आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करने का एक शानदार तरीका है।

विहंगम दृष्टिपातः (skimming) पठन योग्यताओं में विहंगम दृष्टिपातः (skimming) पाठ के मुख्य अथवा सामान्य विचार को जानने के लिए प्रयुक्त विधि है। जिसमें किसी विषयवस्तु से मुख्य विचार को ग्रहण किया जाता है।

विहंगम दृष्टिपात / अवलोकन से तात्पर्य- जब विषयवस्तु पर सरसरी निगाह डाली जाती है, तो यह विहंगावलोकन है। इसे ही विहंगम दृष्टि भी कहते हैं।

- इसके द्वारा पाठक पाठ्यवस्तु की अपने मस्तिष्क में रूपरेखा तैयार करता है।

• इसके द्वारा पाठ्यवस्तु के जटिल वर्णन को ज्ञानात्मक मानचित्र के अंतर्गत स्थान दिया जाता है। • इसके तहत शीर्षक, उप-शीर्षक, मोटे अक्षर तथा चित्रों से पाठक विषयवस्तु की सामान्य अवधारणा विकसित करते हैं।

क्रमवीक्षणम् (Scanning) तकनीक का उपयोग **विशिष्ट जानकारी की खोज** में किया जाता है, और यह परीक्षा के लिए विषय प्राप्त करने के लिए बेहद प्रभावी हो सकती है।

- जब शिक्षार्थी क्रमवीक्षण करते हैं, तो वे एक पाठ को तेजी से देखते हैं और उसके अंदर विशेष शब्दों, वाक्यांशों, या जानकारी की खोज करते हैं।
- इस तकनीक की मदद से, वे अपने अध्ययन को केंद्रित और उद्देश्यपूर्वक बना सकते हैं, और उन्हें जरूरत होने पर सही जानकारी को तेजी से पहचानने और उसे याद रखने में मदद मिलती है।

• उदाहरण के लिए, अगर एक शिक्षार्थी को परीक्षा में एक विशिष्ट सिद्धांत पर प्रश्नों का सामना करना हो, तो वे क्रमवीक्षण का उपयोग कर सकते हैं ताकि वे उस सिद्धांत के बारे में विशिष्ट विवरण जैसे परिभाषा, संबंधित उदाहरण, और प्रभाव तेजी से ढूंढ सकें।

डायलॉगिक रीडिंग छात्रों द्वारा पढ़े जा रहे पाठ के इर्द-गिर्द उनके साथ संवाद करने की प्रक्रिया है । इस संवाद में बच्चों को पाठ को गहराई से जानने में मदद करने के लिए प्रश्न पूछना शामिल है, जिसमें नए शब्दों को परिभाषित करना, कहानी के घटकों का विश्लेषण करना और पाठ के बारे में बात करने में सक्षम होना शामिल है। दूसरे

शब्दों में, डायलॉगिक रीडिंग निर्देशित और मचान वाली रीडिंग का एक रूप है जहां सटीकता और प्रवाह से अधिक ध्यान व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक समझ पर होता है।

जब अधिकांश वयस्क बच्चे के साथ किताब साझा करते हैं, तो वे पढ़ते हैं और बच्चा सुनता है। संवाद वाचन में, वयस्क बच्चे को कहानी कहने वाला बनने में मदद करता है। बच्चे के लिए वयस्क श्रोता, प्रश्नकर्ता, श्रोता बन जाता है।

डायलॉगिक रीडिंग में मौलिक रीडिंग तकनीक है। यह एक बच्चे और वयस्क के बीच एक संक्षिप्त बातचीत है। वयस्कः

बच्चे को कहानी के बारे में कुछ कहने के लिए प्रेरित करें, बच्चे की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करता है,

बच्चे की प्रतिक्रिया को दोबारा दोहराकर और उसमें जानकारी जोड़कर उसका विस्तार करता है, और यह सुनिश्चित करने के लिए संकेत को दोहराता है कि बच्चे ने विस्तार से सीखा है।

REET 2025 L - 1 & 2 संस्कृत वंदन बैच

लेखन कौशल

लेखनकौशलस्य अर्थः लेखनकौशलस्य अर्थः लेखनकौशलस्य विषये छात्राणां कृते सम्यक् वर्णमालाव्यवस्था, स्पष्टं सुन्दरं च लेखनं, वाक्यविन्यासस्य नियमानाम् अनुसरणं, तथा च लेखने समुचितव्याकरणस्य, शब्दानां प्रयोगस्य, तार्किकक्रमस्य च अभ्यासः क्रियते। लिखितव्यञ्जनकौशलम् इत्यपि कथ्यते ।

लेखन कौशल का अर्थ - सामन्यतः लिखकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करना लेखन कौशल कहलाता है। इसे लिखित अभिव्यक्ति कौशल भी कहते हैं

भाषा के दो रूप हैं- मौखिक और लिखित । मुखावयवों से ध्वनियाँ निकालकर अपने विचारों को प्रकट करना भाषा का मौखिक रूप होता है । ध्वनियों के लिए निश्चित किए गए विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को लिपिबद्ध करना भाषा का लिखित रूप होता है।

लेखन- कौशल शिक्षण के उद्देश्य

लेखन कौशल के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए लेखन - कौशल शिक्षण के अधोलिखित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं-

- ✓ समीचीनलेखनशास्त्रस्य ज्ञानम् : छात्राणां समीचीनरूपेण अक्षरलेखनस्य शिक्षणम्।
- ✓ सुन्दरं, स्पष्टं पठनीयं च लेखनम् : छात्रान् सुन्दरं सुव्यवस्थितं च लेखनं अभ्यासं कर्तुं।
- ✓ शब्दनिर्माणे परिवर्तनस्य विषये सूचनां दातुं : शब्दनिर्माणे अक्षराणां परिवर्तनस्य, संयोजनस्य च विषये सूचनां दातुं।

कमल
कलम

- ✓ स्वर-संयुक्त-व्यञ्जनयोः सम्यक् लेखनम् : स्वर-संयुक्त-व्यञ्जनयोः सम्यक् लेखनस्य प्रशिक्षणं छात्रान् कर्तुं।
- ✓ वाक्यविन्यासस्य नियमस्य ज्ञानम् : सम्यक् वाक्यनिर्माणाय आवश्यकानां नियमानाम् परिचयं कर्तुं।
- ✓ विरामचिह्नानां सम्यक् प्रयोगः : लेखने विरामचिह्नानां समुचितप्रयोगं शिक्षितुं।
- ✓ विचारान् अनुभवान् च लिखितुं क्षमता : छात्रेषु स्वविचारं शब्दैः व्यक्तं कर्तुं क्षमता विकसितुं।

- ✓ तार्किकक्रमेण विचाराणां अभिव्यक्तिः : छात्राणां कृते स्वविचारानाम् व्यवस्थितरूपेण तार्किकरूपेण च प्रस्तुतीकरणस्य अभ्यासं दातुं।
- ✓ भिन्न-भिन्न-शब्दरूप-उपयोग-प्रयोगः- सन्दर्भानुसारं शब्द-उपयोग-प्रयोग-क्षमतां विकसितुं।
- ✓ विषयसमुचितभाषाशैली : विषयानुसारं समुचितभाषाशैलीं स्वीकर्तुं कौशलं शिक्षितुं।
- ✓ सृजनात्मकता साहित्यसृष्टौ रुचिः च : छात्राणां मध्ये सृजनशीलतां विकसयित्वा साहित्ये रुचिं विकसितुं।

(1) छात्रों को शुद्ध अक्षर - विन्यास का ज्ञान करवाना ।

(2) छात्रों को सुन्दर, स्पष्ट एवं सुवाच्य लेख का अभ्यास करवाना ।

(3) छात्रों को शब्द रचना करते हुए वर्णों (अक्षरों) में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों से अवगत करवाना ।

(4) छात्रों को स्वरों की मात्राओं एवं संयुक्त व्यंजनों के शुद्ध लेखन से परिचित करवाना ।

(5) छात्रों को वाक्य-रचना के नियमों से परिचित करवाना |

(6) छात्रों को लेखन में विराम चिह्नों का सही-सही प्रयोग करने में सक्षम बनाना

(7) छात्रों में अपने अनुभवों एवं विचारों को लिखकर प्रकट करने की योग्यता विकसित करना ।

(8) छात्रों को अपने विचार तार्किक क्रम में अभिव्यक्त करने के योग्य बनाना ।

(9) छात्रों को विभिन्न शब्द-रूपों, धातु-रूपों एवं सूक्तियों का प्रसंगानुसार समुचित प्रयोग करने में सक्षम बनाना ।

(10) छात्रों में विषयानुकूल भाषा-शैली अपनाने की योग्यता विकसित करना ।

(11) छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करते हुए उनमें साहित्य-सृजन के प्रति रुचि उत्पन्न करना ।

लेखन - कौशल को विकसित करने की विधियाँ

लेखनकौशलस्य विकासाय शिक्षणस्य विविधाः चरणाः पद्धतयः च निम्नलिखितरूपेण प्रवर्तयितुं शक्यन्ते ।

लेखनस्य प्रेरणा : लेखनकौशलस्य प्रथमपदे छात्राः लेखनार्थं प्रेरिताः भवन्ति। कक्षायाः वातावरणं प्रेरणादायकं करणीयम्, यथा सुन्दराणि चित्राणि, चार्ट्स्, वर्णयुक्तैः चॉकैः अलङ्कृतानि कृष्णफलकानि च उपयुज्यन्ते, येन छात्राः लेखने रुचिं लभन्ते। अस्य कृते सहायकसामग्रीणां प्रयोगः अपि प्रेरणादायकः अस्ति ।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

वर्णमाला : लेखनस्य द्वितीयपदे वर्णमाला पाठ्यते। वर्णमाला विभिन्नविधैः पाठयितुं शक्यते :

अनुकरणविधिः : अस्मिन् पद्धत्या छात्राः शिक्षकस्य लेखनस्य अनुसरणं कृत्वा अक्षराणां अभ्यासं कुर्वन्ति।

चित्रविधिः- अक्षराणां का-कपोट्, ख-खग इत्यादिभिः चित्रैः सह सङ्गतिं कृत्वा उपदिश्यन्ते ।

कृत्रिमविधिः रेखाविधिः अपि कथ्यते, यस्मिन् ऊर्ध्वाधर, क्षैतिज, तिर्यक् रेखाभिः, वृत्तैः च वर्णाः पाठ्यन्ते ।

अ

क

पेस्तालोज्जी विधिः - अक्षराणां खण्डेषु विभज्य एकत्र संयोजयित्वा निर्माणस्य अभ्यासः ।

माण्टेसरी पद्धतिः- छात्राय काष्ठानि वा गत्तापत्राणि वा अक्षराणि दत्त्वा लेखनं शिक्षितं भवति।

शब्दाः वाक्यविन्यासश्च : तृतीये चरणे अक्षरेभ्यः शब्दान्, शब्देभ्यः वाक्यानि च निर्मातुं अभ्यासः क्रियते । अस्मिन् समये छात्राः सुलेखस्य, प्रतिलेखनस्य, प्रतिलिपिकरणस्य च माध्यमेन सुव्यवस्थितस्य स्पष्टस्य च लेखनस्य आदतं विकसयन्ति ।

डिक्टेशन/श्रुतलेखः : अस्मिन् स्तरे छात्राः श्रुतलेखस्य अभ्यासं कुर्वन्ति, यस्मिन् ते श्रुत्वा सम्यक् लेखनस्य अभ्यासं कुर्वन्ति।

लेखन-अभ्यासः : लेखन-कौशलस्य अन्तिमपदे छात्राणां स्वतन्त्र-लेखनस्य अभ्यासः क्रियते । अस्मिन् क्षणे छात्राः व्याकरणभाषायाः उपयोगेन स्वविचाराः तार्किकरूपेण लिखितुं प्रोत्साहिताः भवन्ति ।

अस्य कृते निम्नलिखितविधयः स्वीकर्तुं शक्यन्ते ।

- ✓ छात्राणां कृते लिखितकार्यस्य नियमितरूपेण अभ्यासं दातुं।
- ✓ मानसिकस्त्तरनुसारं विषयान् दत्त्वा मौलिकलेखनार्थं प्रेरणादातुम्।
- ✓ विभिन्नविषयेषु विचारलेखनार्थं प्रोत्साहयितुं।
- ✓ पत्र, निबन्ध, कथा आदि लेखन हेतु प्रेरणा देना।
- ✓ सृजनात्मककार्यद्वारा लेखनस्य अभ्यासः।
- ✓ छात्राणां समुचितं मार्गदर्शनं कर्तुं।

(1) लेखन हेतु प्रेरणा- यह लेखन कार्य की प्रथमावस्था है। इसके अन्तर्गत छात्रों को लिखने के लिए तैयार किया जाता है । कक्षा-कक्ष का वातावरण सुरुचिपूर्ण बनाया जाना चाहिए। इसके लिए कक्षा-कक्ष विभिन्न प्रकार के प्रेरक चित्र, चार्ट आदि लगाने चाहिए । कक्षा में उचित आकार का श्यामपट्ट हो तथा उस पर रंग-बिरंगे चाकों का प्रयोग करना चाहिए। यथासंभव सहायक सामग्री का उपयोग छात्रों में लेखन - कौशल को विकसित करने में अभिप्रेरक का कार्य करता है ।

(2) अक्षर - विन्यास - यह लेखन कार्य की द्वितीयावस्था है। यद्यपि संस्कृत शिक्षण का कार्य सामान्यतः परिवर्तन का ज्ञान इस स्तर पर दिया जाना अनिवार्य है। छात्रों को समुचित अक्षर - विन्यास का बोध कराने के लिए निम्न में से कोई भी विधि अपनायी जा सकती है -

(i) अनुकरण विधि- अक्षर - विन्यास सिखाने की यह अत्यन्त प्राचीन विधि है। इस विधि में छात्राध्यापक द्वारा स्लेट, तख्ती, कॉपी अथवा श्यामपट्ट पर लिखे हुए का अनुकरण करते हुए छात्र अक्षरों को सही ढंग से लिखने का अभ्यास करते हैं

(ii) चित्र विधि - इस विधि में वर्णों को चित्रों के साथ जोड़ दिया जाता है । यथा - क - कपोतः, ख- खगः, ग–गर्दभः, घ–घटः आदि । इस विधि को अपनाकर बड़ी सरलता से खेल-खेल में छात्रों को अक्षरविन्यास सिखाया जा सकता है । वैसे भी लिपि का विकास चित्रों से ही हुआ है और छात्रों की चित्रों में विशेष रुचि होती है

(iii) संश्लेषणात्मक विधि - इसे रेखा विधि भी कहते हैं । देवनागरी लिपि के सभी वर्ण रेखाओं और वृत्तों से बनते है। इस विधि का अनुकरण करते हुए छात्रों को विभिन्न खड़ी, पड़ी, तिरछी रेखाओं तथा पूर्ण वृत्त, अर्ध वृत्त आदि को मिलाकर वर्ण- रचना सिखाई जाती है ।

(iv) पेस्टालॉजी विधि - इस विधि को अपनाते हुए अक्षरों को टुकड़ों में तोड़ लिया जाता है, तत्पश्चात् एक-एक टुकड़े को जोड़कर अक्षर बनाने का अभ्यास करवाया जाता है । परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से इस विधि को ज्यादा मनोवैज्ञानिक नहीं माना गया है।

(v) मांटेसरी विधि - इस विधि में बालक को लकड़ी अथवा गत्ते को काटकर बनाए गए अक्षर दिए ।

(3) शब्द एवं वाक्य - विन्यास - यह लेखन कौशल की तृतीयावस्था है। इस अवस्था में छात्रों को वर्णों से शब्द तथा शब्दों से वाक्य-रचना सिखाई जाती है क्योंकि वर्णों के संश्लेषण से शब्द तथा शब्दों अथवा पदों के संश्लेषण से वाक्य बनते हैं ।

यह लेखन - कौशल शिक्षण की बहुत ही महत्त्वपूर्ण अवस्था है। इस समय छात्र में लिखने से सम्बन्धित जैसी आदतें विकसित हो जाती हैं, वे यावज्जीवन वैसी ही बनी रहती हैं । अतः इस अवस्था में छात्रों को शुद्ध, स्पष्ट, सुन्दर एवं सुडौल लेखन का अभ्यास करवाना चाहिए ।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु छात्राध्यापक द्वारा निम्न विधियों का उपयोग करना चाहिए-

(i) सुलेख -

(ii) अनुलिपि -

(iii) प्रतिलिपि -

(4) श्रुतलेख -

(5) लेखन - अभ्यास - यह छात्रों में लेखन कौशल को विकसित करने की चतुर्थ एवं अन्तिम अवस्था है। इस अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते छात्र देखकर व सुनकर शुद्ध, स्पष्ट, सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण लेखन के माध्यम से शब्द एवं वाक्य लिखने के अभ्यस्त हो चुके होते हैं । अतः इस अवस्था में छात्रों को व्याकरण-सम्मत भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारों एवं भावों को तार्किक क्रम में लिखने का अभ्यास करवाना होता है ताकि छात्रों में पूर्णतया लेखन - कौशल का विकास हो सके।

REET 2025 L-1&2 संस्कृत वंदन बैच

छात्रों को लेखन-अभ्यास कराने के लिए निम्न बातों का अनुसरण करना चाहिए-

(i) कक्षा में छात्रों को यथासम्भव लिखित कार्य का अभ्यास करवाते रहने का प्रयत्न करना चाहिए।

(ii) छात्रों बौद्धिक एवं मानसिक स्तर के अनुरूप विषय देकर उन्हें मौलिक रूप से लेखन के लिए प्रेरित करना चाहिए ।

(iii) छात्रों को विभिन्न विषयों पर अपने विचार लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के लिए कहा जाना चाहिए ।

(iv) छात्रों को अभ्यासगत प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ।

(v) छात्रों को पत्र, निबन्ध, कथा आदि को अपने शब्दों में लिखने के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए।

(vi) लेखन - कौशल को विकसित करने हेतु किसी प्रकार के रचनात्मक कार्य का सम्पादन अत्यन्त उपयोगी रहता है।

(vii) छात्रों के लिए अध्यापक का समुचित मार्गदर्शन लेखनाभ्यास हेतु सर्वत्र अपेक्षित होता है।

• प्रक्रियालेखन में आमतौर पर कई चरण शामिल होते - हैं-

पूर्वलेखन | प्रारूपण | संशोधन | संपादन | मूल्यांकन

लेखनप्रक्रियायां लेखनस्य गुणवत्तां प्रभावशीलतां च वर्धयितुं विविधानि पदानि अनुसृतानि भवन्ति । एतेषु मुख्यतया निम्नलिखितपदार्थाः सन्ति ।

1. पूर्वलेखनम् :

अस्मिन् चरणे लेखकः विषयानुसारं पाठकानां प्रयोजनानुसारं योजनां करोति ।

पूर्वलेखनस्य मुख्यं उद्देश्यं मानसिकरूपरेखां वा प्रारूपं वा निर्मातुं भवति यस्मिन् लेखकः विषयस्य व्यवस्थितरूपेण आयोजनं करोति ।

2.विचारविमर्शः :

लेखनस्य आरम्भे विचाराणां मस्तिष्कविक्षेपः आवश्यकः। मुख्यतया लेखनपूर्वस्य चरणस्य भागः अस्ति, यस्मिन् लेखकः विविधविचारानाम् संकलनं, व्यवस्थितीकरणं च करोति ।

विचारविमर्शद्वारा लेखनप्रक्रियायां अधिका तर्कशीलता, स्पष्टता च भवति ।

विचारविमर्शः लेखस्य उद्देश्यस्य, शैल्याः, पाठकानां अपेक्षायाः च अनुसारं विचारान् व्यवस्थितुं साहाय्यं करोति ।

2.मानसिकस्वरूपम् : एतत् मानसिकं चित्रं भवति यत् लेखनस्य विचाराणां व्यवस्थितीकरणे सहायकं भवति, येन लेखकः स्वविचारं व्यवस्थितरूपेण प्रभावीरूपेण च व्यक्तं कर्तुं शक्नोति।

3. प्रारूपणम् :

प्रारूपणमञ्चे विचारान् सूचनां च वाक्येषु अनुच्छेदेषु च व्यवस्थितं भवति ।

अस्मिन् चरणे लेखकाः स्वविचारं विस्तरेण लिखित्वा स्वस्य लेखस्य मसौदां कुर्वन्ति ।

4. संशोधनम् :

संशोधनस्य अन्तर्गतं लेखकाः स्वलेखस्य संशोधनं कृत्वा आवश्यकं परिवर्तनं कुर्वन्ति ।

एतेन शीर्षकाणां, उपशीर्षकाणां, अध्यायक्रमस्य, भाषायाः, अन्येषां तिथयः सन्दर्भाणां च सम्यक् उपयोगः सुनिश्चितः भवति ।

अस्य सोपानस्य उद्देश्यं लेखः अधिकसटीकः स्पष्टः च भवतु ।

5. सम्पादनम् :

सम्पादनस्य अर्थः अस्ति यत् लेखस्य एतादृशेन सुधारः करणीयः यत् सः सार्वजनिकप्रदर्शनाय वा प्रकाशनाय वा उपयुक्तः भवति । अस्मिन् चरणे भाषा, भावना, क्रमः, तथ्यसटीकता च परीक्षिता भवति ।

लेखस्य सम्यक् सुधारं परिष्कारं च कृत्वा प्रकाशनस्य वा सार्वजनिकप्रस्तुतस्य वा योग्यं भवति ।

प्रक्रियालेखनस्य एतेषां पदानां अनुसरणं कृत्वा लेखकाः स्वविचाराः संगठितरूपेण स्पष्टतया च प्रस्तुतुं शक्नुवन्ति, तस्मात् तेषां लेखंनस्य गुणवत्ता, संप्रेषणीयता च वर्धते।

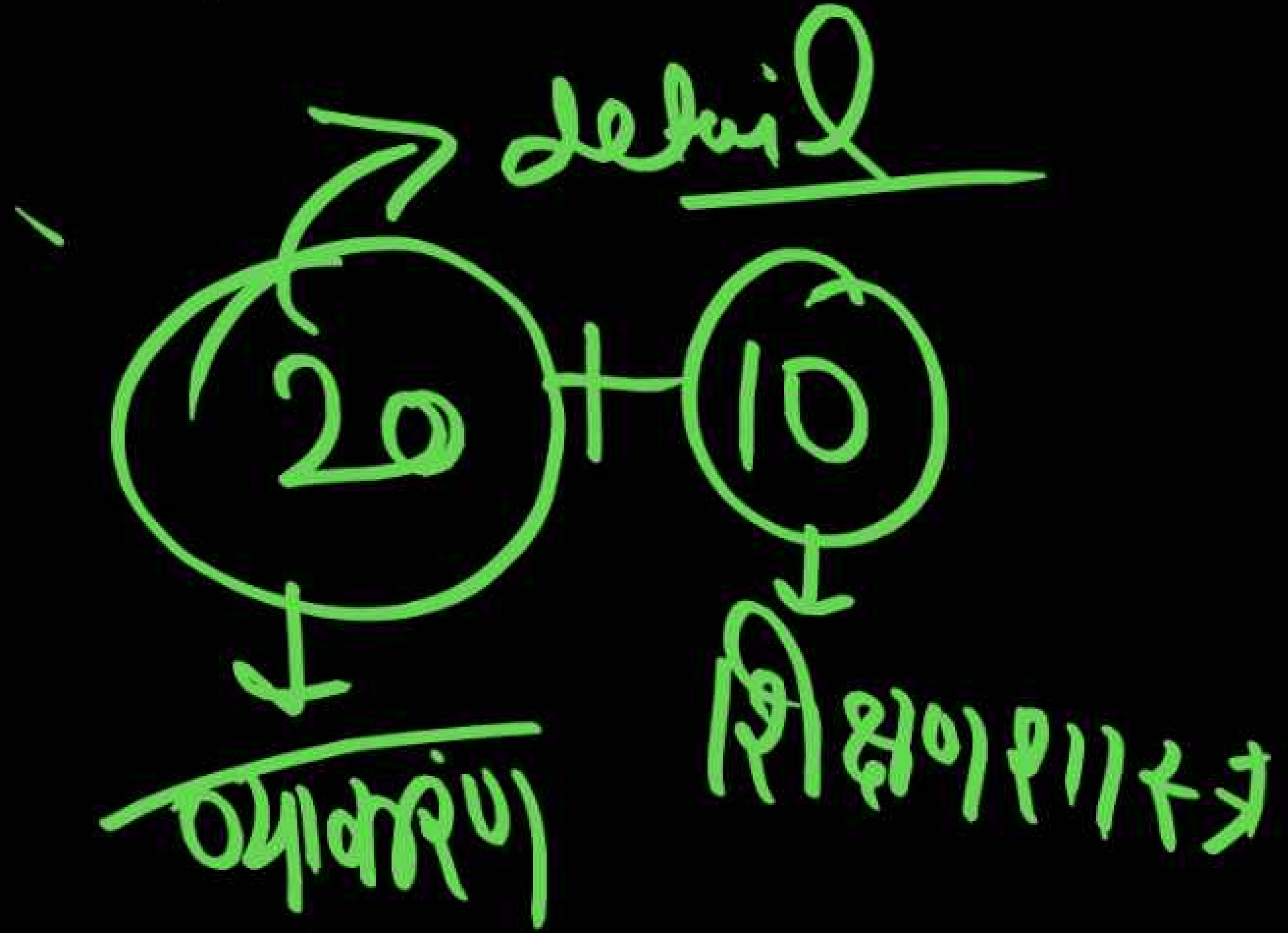

•**विचार-मंथन** यह कौशल विशेष रूप से **पूर्व लेखन चरण** के लिए महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षार्थी को बाद में प्रक्रिया में नए विचारों की आवश्यकता होती है, तो वह विभिन्न चरणों में विचार-मंथन का प्रयोग कर सकता है। इस तरह शिक्षार्थी लेखन प्रक्रियोपागम के माध्यम से अपने लेखन लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रक्रिया लेखन में विचार मंथन-

- छात्र विचारों का संकलन अथवा समायोजन करते हैं।
- प्रक्रिया लेखन यह विचार को उत्तेजित करता है जिससे लिखने में अधिक तर्कपूर्णता आती है।
- छात्र पाठ के उद्देश्य, दर्शकों और शैली पर विचार करके विचारों का आयोजन करते हैं।

लेखन प्रक्रिया के चरण

• **पूर्वलेखन -** पूर्वलेखन से तात्पर्य विषय और लक्ष्य दर्शकों के लिए स्थिति या दृष्टिकोण को निर्धारित करने के लिए योजना बनाने तथा अंतिम उत्पाद के लिए सामग्री व्यवस्थित करने के लिए एक रूपरेखा विकसित करना है। इसे दूसरे शब्दों में प्रारूप तैयार करना कह सकते हैं।

"मानसिक स्वरूप" लेखन प्रक्रिया के पूर्वलेखन स्तर में सबसे सहायक होता है। इसका मुख्य उद्देश्य विचारों और जानकारी को संगठित करना है, और यह आमतौर पर विचारधारा की योजना बनाने और आयोजन करने में मदद करता है। **मानसिक स्वरूप:** मानसिक स्वरूप एक विचारधारा का चित्रण होता है, जो लेखन की प्रक्रिया के शुरुआती चरण में उपयोगी हो सकता है। यह छात्रों को उनके विचारों को संगठित करने और पाठ्य सामग्री के बारे में सोचने की

अनुमति देता है, जो उन्हें अपने विचारों को और अच्छी तरह से स्पष्ट करने में मदद करता है।

आलेखन - लिखने की प्रक्रिया के दौरान वाक्य और पैराग्राफ में सूचना और विचारों का आयोजन |

संशोधन - इस प्रक्रिया के अन्तर्गत पुनरावलोकन शामिल हैं। लेखक अपने द्वारा लिखे हुए लेख का पुन: अवलोकन कर उसमें आवश्यक संशोधन करता है। इसमें निम्न बिन्दु शामिल किए जाते हैं - शीर्षक, उपशीर्षक, अध्याय का क्रम, व्याकरण की दृष्टि से भाषा सुधार, नाम, घटना, तिथि और प्रसंग का उचित उपयोग ।

संपादन - संपादन का अर्थ किसी लेख को सार्वजनिक प्रयोग अथवा प्रकाशन के योग्य बना देना है। किसी लेख के संपादन में भाषा, भाव तथा क्रम के साथ-साथ उसमें आये हुए तथ्य का संशोधन और परिष्कार किया जाता है।